B.A. (Hons) Part I
Philosophy Paper I
Topic जैन दर्शन का स्याद्वाद सिद्धान्त

Dr. Sachidanand Prasad
Department of Philosophy
R.R.S. College, Mokama.

जैन दर्शन में स्यादवाद ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धान्त है। जैन दर्शन का कहना है कि प्रत्येक वस्तु के अनंत गुण होते हैं लेकिन मनुष्य वस्तु के एक ही गुण का ज्ञान एक समय में पा सकता है और वस्तु के अनंत गुणों का ज्ञान मुक्त व्यक्ति के द्वारा ही संभव है। इसप्रकार जैन दर्शन के अनुसार साधारण मनुष्यों का ज्ञान आंशिक होता है। जैन दर्शन में इस आंशिक ज्ञान को नय कहा जाता है। नय किसी वस्तु के समझने के विभिन्न दृष्टिकोण हैं। ये सत्य के आंशिक रूप कहे जाते हैं। इनसे सापेक्ष सत्य की प्राप्ति होती है, निरपेक्ष सत्य की नहीं। जैन दर्शन का कहना है कि किसी भी वस्तु के विषय में हमारा जो निर्णय होता है वह सभी दृष्टिकोण से सत्य नहीं होता है।

उसकी सत्यता विशेष परिस्थिति एवं
विशेष दृष्टि से ही मानी जा सकती
है। लोगों के बीच मतभेद होने का
कारण यह है कि वे अपने विचारों
को ही नितान्त सत्य मानने लगते है
और दूसरे के विचारों की उपेक्षा करते
हैं। जैन दर्शन में इसे पूर्ण रूप से
समझाने के लिए हाथी और छः अन्धों
का उदाहरण देते है। जैन दर्शन का
कहना है कि छः अन्धे हाथी के
आकार का ज्ञान प्राप्त करने के लिए
हाथी के विभिन्न अंगों को स्पर्श
करते है और जो अन्धा अपने हाथों
से हाथी के जिस भाग पर हाथ रखता
है वह उसी को हाथी समझ लेता
है। जो अंधा हाथी के पैर को
पकड़ता है वह हाथी को खम्भे जैसा
समझता है। जो हाथी के सूंड़ को स्पर्श
करता है वह हाथी को अजगर जैसा
बतलाता है। जो हाथी के पूँछ को पकड़ता
है वह हाथी को रस्सी जैसा बतलाता
है। जो हाथी के पेट को छूता है
वह हाथी को दिवार जैसा बतलाता है।
जो हाथी के मस्तक को छूता है वह
हाथी को छाती के समान बतलाता है।
जो हाथी के कान को छूता है वह हाथी

③

को पंखे जैसा बतलाता है। यही कारण है कि जैन दर्शन में प्रत्येक तथ्य के प्रारम्भ में स्यात् शब्द जोड़ने का निर्देश किया गया है। जैसे टेबुल लाल है तो हमें कहना चाहिए स्यात् टेबुल लाल है। अतः जैन दर्शन का स्याद्वाद वह सिद्धांत है जो यह मानता है कि मनुष्य का ज्ञान एकांगी तथा आंशिक होता है। इसी आधार पर जैन दर्शन में परामर्श (Judgement) सात प्रकार के माने गये हैं। तर्कशास्त्र में परामर्श के दो भेद माने गये हैं- भावात्मक और निषेधात्मक। तर्कशास्त्र के दृष्टि से भावात्मक वाक्य का उदाहरण है— 'अ' 'ब' है और निषेधात्मक वाक्य का उदाहरण है- 'अ' 'ब' नहीं है। जैन दर्शन इस वर्गीकरण में कुछ ~~असंशोधन~~ संशोधन करते हैं और दोनों उदाहरणों में ~~स्याद~~ 'स्यात्' शब्द जोड़ देते हैं। उदाहरण के लिए स्यात् 'अ' 'ब' है, स्यात् 'अ' 'ब' नहीं है। जैन दर्शन में सात प्रकार के परामर्श के अन्तर्गत ये दोनों परामर्श भी नीहित है। जैन दर्शन के इस वर्गीकरण को 'सप्त भंगी नय' कहा जाता है।

(4)

1. स्यात् अस्ति
2. स्यात् नास्ति
3. स्यात् अस्ति च नास्ति च
4. स्यात् अवक्तव्यम्
5. स्यात् अस्ति च अवक्तव्यम् च
6. स्यात् नास्ति च अवक्तव्यम् च
7. स्यात् अस्ति च, नास्ति च, अवक्तव्यम् च

1. जैन दर्शन के स्याद्वाद सिद्धान्त की आलोचना करते हुए बौद्ध और वेदान्तियों का कहना है कि एक ही वस्तु एक ही समय मे है और नहीं कैसे हो सकती है?
2. वेदान्त दर्शन में स्याद्वाद की आलोचना करते हुए कहा गया है कि कोई भी सिद्धान्त केवल सम्भावना पर आधारित नहीं हो सकती है। यदि सभी वस्तुएँ सम्भव मात्र है तो स्याद्वाद भी संभवमात्र हो जाता है।
3. स्याद्वाद के अनुसार हमारे सभी ज्ञान सापेक्ष और आंशिक है। आलोचकों का कहना है कि सभी सापेक्ष निरपेक्ष पर आधारित है।
4. जैन दर्शन केवल ज्ञान (Absolute Knowledge) में विश्वास करते हैं। आलोचकों का कहना है कि ऐसा कौन से वे निरपेक्ष ज्ञान में विश्वास करने लगते हैं।